



पाठ-एक दीप बनें हम

प्रकाश, आराधना, बरसात, सीप, साधना, अन्धेरा, कर्म, रचना।



प्रकाश की साधना करें।

ज्ञान की आराधना करें।

अज्ञान का अन्धेरा भगे —

दीप बनें हम ॥

तारों से हम बात करें।

प्रेम की बरसात करें।

मोती रचे कर्म के सदा —

सीप बनें हम ॥

दीप बनें हम ॥

प्रहन-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :
साधना = कार्य-सिद्धि, उपासना।
आराधना = पूजा, उपासना।
सीप = शंख, घोंघे आदि की जाति के एक जलचर प्राणी का खोल।
2. उत्तर दीजिए :
(क) हमें किसकी साधना करनी है ?
(ख) हमें किसकी आराधना करनी है ?
(ग) अज्ञान का अन्धेरा भगाने के लिए हमें क्या करना है ?
(घ) हमें किससे बात करनी है ?
(ङ) कर्म के मोती रचने के लिए हमें क्या करना है ?
(च) 'दीप बनें हम' कविता का मूल भाव लिखिए।
(छ) दीप की क्या विशेषता है ?
(ज) आप दीप बनेंगे तो क्या करना चाहेंगे ?
3. वाक्यों में प्रयाग कीजिए :
प्रकाश -----
साधना -----
आराधना -----
अज्ञान -----
बरसात -----
कर्म -----
सीप -----

4. लिंग बताइए:

साधना	—	-----
ज्ञान	—	-----
तारा	—	-----
आराधना	—	-----
बरसात	—	-----
मोती	—	-----